P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL. -V, ISSUE-II, November-2016
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

शिक्षकों में लैंगिक संवेदनशीलता के प्रति जागरूकता : एक अनुभवमूलक अध्ययन

मनीषा शर्मा
रीडर,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
विद्या भवन गोविन्दराम सेकसरिया शिक्षक महाविद्यालय,
उदयपुर, राजस्थान

सारांश

प्रस्तुत शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य विद्यालयी शिक्षकों में 'लैंगिक संवेदनशीलता' से संबंधित जागरूकताको परखना था।अतः इस उद्देश्य की प्राप्ति भी एक स्वनिर्मित जागरूकता मापनी के माध्यम से ही की गई ताकि विभिन्न संदर्भों में जागरूकता का अध्ययन विभिन्न दृष्टिकोणों से किया जा सके। सर्वेक्षण विधि से कुल 120 शिक्षकों पर किये गये अनुभवमूलक अध्ययन में सभी प्रकार के शिक्षकों में लैंगिक संवेदनशीलता के प्रति जागरूकता का अभाव पाया गया। यद्यपि इस संबंध में शहरी शिक्षकों की ग्रामीण शिक्षकों पर एवं महिला शिक्षकों की पुरूष शिक्षकों पर तुलनात्मक दृष्टि से अवश्य थोड़ी बढ़त पाई गई तथापि ग्रामीण एवं शहरी, दोनों क्षेत्रों में पुरूष एवं महिला शिक्षकों की लैंगिक संवेदनशीलता को समान रूप से बढ़ाये जाने संबंधी प्रयासों में तेजी लाने की तीव्र आवश्यकता है।

मुख्य शब्दः शिक्षक, लैंगिक संवेदनशीलता, जागरूकता, अनुभवमूलक अध्ययन

प्रस्तावना

हमारे परिवेश की सार्थकता इसी बात में निहित है कि स्त्री व पुरूष के समन्वय से जीवन का संतुलन बना रहे। यह तभी संभव है जब लैंगिक असमानताओं को दूर किया जाये और यह कार्य हमारी शिक्षा प्रणाली में विद्यमान लैंगिक विभेद संबंधी गलतियों को दुरूस्त करके ही किया जा सकता है। विद्यालयी शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का आधार स्तंभ होती है। अतः लैंगिक संवेदनशीलता का विकास इस बात पर भी निर्भर हो जाता है कि इससे जुड़े विभिन्न मुद्दों के प्रति शिक्षकों में कितनी जागरूकता है।

जेण्डर संवेदनशीलता के सम्बन्ध में N.C.F. 2005 के शीर्षक ''शिक्षा का सामाजिक संदर्भ'' में स्पष्ट किया गया है कि समाज में असमान लैंगिक सम्बन्ध न केवल वर्चस्व को बढ़ावा देते है बल्कि वे लड़के – लड़कियों में तनाव भी पैदा करते है तथा उनकी मानवीय क्षमाताओं के पूर्ण विकास की स्वतंत्रता में बाधा पहुँचाते है। यह सर्वाहित में है कि मनुष्य एवं समाज को लिंग असमानताओं से मुक्त कराए जाए।

लैंगिक संवेदनशीलता के प्रति शिक्षकों की जागरूकता को विभिन्न संदर्भों में न्यून अथवा अधिक मात्रा में देखा और समझा जा सकता है। विद्यालय में ऐसे कई क्रियाकलाप होते हैं जिनमें लैंगिक संबंधी संवेदनशीलता अथवा असंवेदनशीलता को महसूस किया जा सकता है। इस बात की पुष्टि हम अपने विद्यालयी जीवन पर एक दृष्टिपात करके स्वयं कर सकते हैं। हम देखते हैं कि हमारे विद्यालयों में किस प्रकार से कुछ कार्य प्रायः सिर्फ लड़कों एवं कुछ कार्य सिर्फ लड़कियों को करने के लिए दिये जाते हैं।

विद्यालयी कार्यकलापों के अलावा पाठ्यचर्या, विषय चयन, शिक्षण के दौरान प्रयुक्त होने वाले वैयक्तिक उदाहरण, कार्य विभाजन एवं व्यवसाय चयन ऐसे कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण क्षेत्र हैं जिनके प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण काफी हद तक यह बताने के लिए पर्याप्त हैं कि वे लैंगिक दृष्टि से कितने संवेदनशील हैं। सतही तौर पर देखने पर ये सभी क्षेत्र बड़े साधारण लगते हैं परन्तु जब इनके प्रति अपना दृष्टिकोण रखने की नौबत आती है तो हम सब विभिन्न प्रकार के पूर्वाग्रहों से ग्रसित हो कहीं न कहीं लैंगिक संवेदनशीलता को भूल जाते हैं।

मनुष्य के इसी सहज स्वभाव को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध पत्र में विभिन्न संदर्भों में लैंगिक संवेदनशीलता के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है ताकि इस बारे में उनकी जागरूकता का सांगोपांग अध्ययन संभव हो सके। एक सत्य यह भी है कि सम्पूर्ण परिप्रेक्ष्य में किये गये अध्ययन के आधार पर ही सामान्यीकृत निष्कर्ष निरूपित किये जा सकते हैं।

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL. -V, ISSUE-II, November-2016
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

Swainson,N. et al (1998) के शोध कार्य मुख्यतः अफ्रीका में बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु नीतिगत हस्तक्षेप की रूपरेखा एवं क्रियान्वयन का अध्ययन करना है। इस शोध कार्य के विश्लेषण की विधि गुणात्मक है। इसमें विभिन्न दस्तावेजों के विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष स्वरूप पाया गया कि तंजानिया में बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के संदर्भ में किये गये सरकारी प्रयासों का व्यापक सफलता मिली है तथा शिक्षा में ये नीतिगत हस्तक्षेप अत्यन्त कारगर सिद्ध हुये हैं।

Maluwa, Dixie (2004) के शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य अफ्रीका के मलावी देश में लैंगिक संवेदनशील शैक्षिक नीति एवं अभ्यास का अध्ययन करना है। दस्तावेज विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष पाया गया कि जब से इस देश में लैंगिक संवेदनशील शैक्षिक नीति को लागू कर इसका क्रियान्वयन किया है,तब से शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर छात्र व छात्राओं के अनुपात में गणनात्मक स्थिरता लिये वृद्धि दर्ज की गई है साथ ही उनकी शैक्षणिक निष्पत्ति में गुणात्मक सुधार भी देखने को मिला है।

Mukhopadhyay, Pallav (2005) के शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य पश्चिम बंगाल में लैंगिक असमानता एवं महिलाओं की शिक्षा के विस्तार की समस्या का अध्ययन करना है। जिससे निष्कर्ष स्वरूप यह पाया गया कि 70 प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं ने शिक्षा में लैंगिक भेदभाव की बात स्वीकारी जबकि शहरी महिलाओं ने अपनी स्थिति को आंषिक रूप से बेहतर बताया। वहीं 70 प्रतिशत महिलाओं ने यह माना कि उनके राज्य की 20–25 प्रतिशत महिलाओं के साथ लैंगिक भेदभाव किया जाता है।

Basu, Salil and Koumari Mitra (2006) के शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य महिलाओं की प्रजननीय स्वास्थ्य सेवाओं के सुधार हेतु लैंगिक संवेदनशील दृष्टिकोण की आवश्यकता पर शोध कार्य करना है। इस शोध कार्य में 68 प्रतिशत छात्राओं ने माना कि उनकी माताओं का दृष्टिकोण लैंगिक संवेदनशील होने से उनके स्वास्थ्य, विशेषकर प्रजनन के उपरान्त अपेक्षाकृत बेहतर पाया गया।

Allan, Anita: Nargis (2010) ने माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों की लैंगिक मुद्दों के प्रति जागरूकता, शिक्षकों की लैंगिक मुद्दों की सामाजिक स्थिति तथा शिक्षकों व विभिन्न सेवा प्रदाताओं के बीच नेटवर्किंग कोअपने शोध कार्य का विषय बनाया। निष्कर्षतः पाया गया कि माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों में लैंगिक मुद्दों के प्रति जागरूकता उच्च पाई गई, साथ ही माध्यमिक विद्यालय के अध्यापक कक्षा में लैंगिक के प्रति संवेदनशीलता लाने का उच्च प्रयास करते हैं।

Jain, Geeta (2010) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्म–प्रत्यय की धारणाओं का अध्ययन, किशोर बालक–बालिकाओं की स्व प्रत्यय के विकास की तुलना ग्रामीण व शहरी बालक–बालिकाओं में स्व–प्रत्यय के विकास की तुलना व राजकीय विद्यालय व गैर राजकीय विद्यालय में बालक–बालिकाओं के स्व–प्रत्यय की धारणा के विकास का अध्ययन संबंधी शोध कार्य किया। निष्कर्षतः पाया गया कि विद्यार्थियों के स्व–प्रत्यय की धारणा पर लैंगिक भिन्नता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

Girvan, Marnie (2013) प्रस्तुत शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य शिक्षा एवं लैंगिक समानता पर प्रासंगिक अध्ययन करना है। इस अध्ययन के निष्कर्ष में मुख्यतः यह पाया गया कि प्राथमिक स्तर की शिक्षा में तो छात्र–छात्राओं, दोनों के अनुपात में वृद्धि देखने को मिली है परन्तु जैसे–जैसे यह स्तर माध्यमिक से उच्च शिक्षा की ओर अग्रसर होता है, यह का अनुपान छात्रों के पक्ष में झुकता गया है।

Gupta, Madhu and Seema (2013) के शोध का मुख्य उद्देश्य शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में काम कर रहे अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि पर लैंगिक व शैक्षिक धारा, शैक्षिक धारा व शिक्षण अनुभव, शिक्षण अनुभव व लिंग के प्रभाव का व शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में काम कर रहे अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि पर लैंगिक व शिक्षण अनुभव व लिंग के प्रभाव का अध्ययन करना था। निष्कर्ष के रूप में पाया गया कि पुरूष व महिला शिक्षकों में व्यावसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

समस्या का औचित्य

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। इसके वस्तुतः दो निहितार्थ हैं– प्रथम, शिक्षा द्वारा सामाजिक परिवर्तन लाया जा सकता है और द्वितीय, सामाजिक परिवर्तन शिक्षा को प्रभावित करते हैं। इस प्रकार शिक्षा व समाज का यही पारस्परिक सम्बन्ध लैंगिक संवेदनशीलता जैसी सामाजिक अवधारणा एवं विद्यालयी शिक्षा प्रणाली को भी स्वाभाविक ढंग से संबंधित कर देता है। यही कारण है कि वर्तमान में शिक्षा द्वारा बालकों में लैंगिक संवेदनशीलता उत्पन्न किये जाने पर विचार–मंथन किया जाता रहा है। वास्तव में देखा जाये तो बालक ही राष्ट्र का भविष्य होते हैं जिनके कर्णधार हमारे विद्यालयी शिक्षक होते हैं। अतः इन शिक्षकों के सामूहिक प्रयासों द्वारा ही एक लैंगिक संवदेनशील समाज का निर्माण किया जा सकता है जिसके लिए पहले यह जानना अति आवश्यक हो जाता है कि इस बारे में शिक्षक स्वयं कितने जागरूक हैं? यही प्रश्न प्रस्तुत शोध पत्र का केन्द्रीय विषय है जो इसके औचित्य को सिद्ध करता है।

शोध प्रश्न

1. क्या शिक्षक लैंगिक संवेदनशीलता के प्रति जागरूक हैं?
2. क्या ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के शिक्षकों में लैंगिक संवेदनशीलता के प्रति जागरूकता समान रूप से पाई जाती है?
3. क्या पुरूष एवं महिला शिक्षक लैंगिक संवेदनशीलता के प्रति समान रूप से जागरूक हैं?

समस्या अभिकथन

''शिक्षकों में लैंगिक संवेदनशीलता के प्रति जागरूकता : एक अनुभवमूलक अध्ययन''

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL. -V, ISSUE-II, November-2016
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

उद्देश्य

1. विभिन्न संदर्भों में शिक्षकों की लैंगिक संवेदनशीलता के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की लैंगिक संवेदनशीलता के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. पुरूष एवं महिला शिक्षकों की लैंगिक संवेदनशीलता के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शून्य परिकल्पनाएँ

1. ग्रामीण व शहरी शिक्षकों में लैंगिक संवेदनशीलता के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. महिला व पुरूष शिक्षकों में लैंगिक संवेदनशीलता के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

पारिभाषिक शब्दावली

लैंगिक

स्त्री/पुरूषों के बीच अधिकारों तथा कर्त्तव्यों के बीच अन्तर की सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवस्था।

संवेदनशीलता

व्यवहारों, परिस्थितियों में जागरूकता।

जागरूकता

निश्चित जानकारी या ध्यान से किसी कर्म या स्थिति की जागरूक सचेतन अवस्था या किसी कार्य के प्रति शारीरिक व मानसिक रूप से सजग व क्रियाशील होना।

अध्ययन का परिसीमन

1. शोध अध्ययन उदयपुर जिले के सह शिक्षा वाले माध्यमिक स्तर के विद्यालयों तक सीमित रखा गया है।
2. शोध अध्ययन में उक्त विद्यालयों के वरिष्ठ अध्यापकों को ही सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध दत्त संकलन हेतु सहशिक्षा वाले माध्यमिक विद्यालयों के कुल 120 वरिष्ठ अध्यापकों चयन स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन विधि के माध्यम से किया गया जिसमें ग्रामीण एवं शहरी तथा पुरूष एवं महिला शिक्षकों की संख्या समान अनुपात में 60–60 रखी गई जैसा कि निम्न तालिका से स्पष्ट है–

न्यादर्श समूह	पुरूष	महिला	कुल	चयन विधि
ग्रामीण	30	30	60	स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन
शहरी	30	30	60	
कुल न्यादर्श – 120				

उपकरण

प्रस्तुत शोध में शिक्षकों की लैंगिक संवेदनशीलता के प्रति जागरूकता के अध्ययन हेतु एक तीन पॉइंट स्केल आधारित जागरूकता मापनी का निर्माण किया। इस मापनी में कुल 26 कथन अंतिम रूप से सम्मिलित किये गये हैं। प्रत्येक कथन के संदर्भ में शिक्षकों को तीन विकल्पों–हाँ, नहीं एवं अनिश्चित में से किसी एक विकल्प को चुनना था। ये सभी कथन कुल चार अलग–अलग क्षेत्रों में विभाजित थे यथा–

क्र. सं.	क्षेत्र	कथन संख्या
1	विद्यालयी कार्यकलाप	5
2	शिक्षा के समान अवसरों की उपलब्धता	9
3	रोजगार के अवसरों में समानता	4
4	सामाजिक मानसिकता	8
कुल		**26**

दत्त संग्रहण की प्रक्रिया

शोध उद्देश्यों से संबंधित आंकड़ों का संग्रहण स्वनिर्मित जागरूकता मापनी के माध्यम से सर्वेक्षण विधि द्वारा किया गया। इस मापनी को स्वयं शोधार्थी द्वारा अध्ययन क्षेत्र में जाकर प्रशासित किया गया जिसमें विभिन्न न्यादर्श समूहों को निर्धारित स्थान दिया गया।

दत्त विश्लेषण की प्रक्रिया

दत्त संग्रहण के पश्चात् उनका वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया। इससे दत्त विश्लेषण में काफी आसानी रही। यह कार्य तीन चरणों में संपादित किया गया–

1. **प्रथम चरण :–** इसमें प्रत्येक कथन पर उत्तरदाताओं की राय को प्रतिशत के रूप में व्यक्त किया गया।
2. **द्वितीय चरण :–** इसमें प्रत्येक कथन को उस पर दी गई प्रतिक्रिया के आधार पर भारांक दिया गया। इस प्रकार हर क्षेत्र का औसत भारांक निकाला जिसे मध्यमान द्वारा व्यक्त किया गया। मध्यमान की विश्वसनीयता मानक विचलन द्वारा ज्ञात की गई।
3. **तृतीय चरण :–** इसमें टी–गुणांक के माध्यम से शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया।

दत्त विश्लेषण एवं व्याख्या

उपर्युक्त प्रक्रिया के अनुसार वर्गीकृत एवं सारणीकृत आंकड़े प्राप्त कर उनका आरेखों के माध्यम से विश्लेषण एवं व्याख्या की गई जो निम्न प्रकार से है–

विद्यालयी कार्यकलाप

1. 20 प्रतिशत शिक्षक मानते हैं कि लड़के एवं लड़कियों के लिए एक साथ पढ़ने की व्यवस्था होनी चाहिए।
2. अधिकांश शिक्षकों, लगभग 62.50 प्रतिशत ने माना कि उनके विद्यालयों में आयोजित प्रत्येक गतिविधियों में लड़के–लड़कियों को समान रूप से भागीदारी के अवसर प्रदान किए जाते हैं।
3. विद्यालयों में समस्त खेलकूद आधारित गतिविधियों में भाग लेने हेतु समान अवसर व प्रोत्साहन दिया जाता है, ऐसा स्वीकार करने वाले शिक्षकों की संख्या सिर्फ 40.83 प्रतिशत ही रही।
4. भारी संख्या में लगभग 49.17 प्रतिशत शिक्षक यह मानते हैं कि सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन में लड़कियों की भागीदारी अधिक होनी चाहिए।
5. क्रिकेट, फुटबॉल जैसे खेलों के संबंध में 32.50 प्रतिशत शिक्षकों को यह लगता है किये खेल केवल लड़कों के लिए ही होते हैं।

शिक्षा के समान अवसरों की उपलब्धता

1. विद्यालयों में बालक व बालिकाओं को समान रूप से विषय चयन के अवसर सुलभ होने संबंधी बात 60 प्रतिशत शिक्षकों ने स्वीकारी।

2. 30.83 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार लड़के–लड़कियों की सहशिक्षा नहीं होनी चाहिए।
3. मात्र 30.83 प्रतिशत शिक्षकों का ही मानना है कि सह शिक्षा में बालिकाएँ हमेशा दबी–सहमी होती हैं।
4. 38.33 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार उनके विद्यालयों में विषय चयन के अन्तर्गत किसी प्रकार की लैंगिक विभिन्नता नहीं है।
5. शिक्षकों का 40.83 प्रतिशत भाग यह मानता है कि विद्यालय में होने वाले विभिन्न कार्यों एवं आयोजनों में बालक एवं बालिकाओं को सहभागिता हेतु समान अवसर एवं प्रोत्साहन दिया जाता है।
6. पाठ्यपुस्तकों की लिखित विषयवस्तु के अन्तर्गत 29. 17 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार विभिन्न दृष्टांत, उदाहरणों आदि में महिला व पुरूष चरित्रों को समान स्थान दिया जाता है
7. विद्यालयों में 44.17 प्रतिशत शिक्षकों द्वारा बालक व बालिकाओं के साथ वार्तालाप के दौरान संवेदनशील भाषा के उपयोग पर ध्यान दिया जाता है।
8. विद्यालयों में 44.17 प्रतिशत शिक्षकों द्वारा बालक व बालिकाओं के साथ वार्तालाप के दौरान संवेदनशील भाषा के उपयोग पर ध्यान दिया जाता है।
9. 26.67 प्रतिशत शिक्षकों ने लड़कियों के लिए सिर्फ कला विषय जैसे गृह विज्ञान, चित्रकला आदि उपयुक्त बताकर अपनी परम्परागत सोच का परिचय दिया

रोजगार के अवसरों में समानता

1. उच्च शिक्षा के लिये लड़कियों को बाहर भेजने को 40 प्रतिशत शिक्षक उपयुक्त नहीं समझते हैं। उनके अनुसार सुरक्षा की दृष्टि से उपयुक्त नहीं होता है।
2. मात्र 23.33 प्रतिशत शिक्षकों का मानना है कि महिलाओं के लिये शिक्षण, नर्स आदि जैसे कार्य ही उपयुक्त हैं।
3. लड़कों को रोजगार हेतु बाहर आसानी से भेजे जाने के बारे में 25.33 प्रतिशत शिक्षक सकारात्मक अभिमत रखते हैं।

सामाजिक मानसिकता

1. 40 प्रतिशत शिक्षक मानते हैं कि कन्या पराया धन है।
2. 40 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार लड़कियों को हमेशा घरेलू, संकोची व सहनशील नहीं होना चाहिए।
3. 30.83 प्रतिशत शिक्षकों को ऐसा लगता है कि महिलाएँ पुरूषों की तुलना में कम बुद्धिमान होती है।
4. मात्र 28.33 प्रतिशत शिक्षकों का ही यह मानना है कि वित्तीय प्रबंधन में पुरूष ही अच्छे होते हैं।
5. 92.50 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार महिलाओं में निर्णय क्षमता होती है।
6. 78.33 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार पुरूषों को घरेलू कार्यों व बच्चों के पालन पोषण में सहयोग देना चाहिए।
7. किसी भी शिक्षक को स्पष्टतः ऐसा नहीं लगता कि पुरूषों को हमेशा कठोर व्यवहार वाला ही होना चाहिए।
8. 38.33 प्रतिशत शिक्षक इस बात को नहीं समझ पाये कि रोना सिर्फ स्त्रियोचित्त लक्षण नहीं है।

तुलनात्मक विश्लेषण

सारणी संख्या : 1

लैंगिक संवेदनशीलता के प्रति ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों ;छत्र60द्ध की जागरूकता का तुलनात्मक विश्लेषण

क्र.सं.	क्षेत्र	न्यादर्श (60)	मध्यमान	मध्यमान अन्तर	मानक विचलन	'टी' मान	सार्थक अथवा असार्थक अन्तर
1.	विद्यालयी क्रियाकलाप	ग्रामीण	5.83	0.34	1.61	1.15	असार्थक (.05)
		शहरी	6.17		1.64		
2.	शिक्षा के समान अवसरों की उपलब्धता	ग्रामीण	9.97	0.71	3.15	1.28	असार्थक (.05)
		शहरी	10.68		2.92		
3.	रोजगार के अवसरों में समानता	ग्रामीण	3.72	0.66	1.92	1.76	असार्थक (.05)
		शहरी	4.38		2.18		
4.	सामाजिक मानसिकता के संदर्भ में	ग्रामीण	9.78	1.72	3.07	3.46	सार्थक (.01)
		शहरी	11.50		2.33		
कुल जागरूकता		**ग्रामीण**	**29.30**	**3.43**	**7.79**	**2.57**	**सार्थक (.05)**
		शहरी	**32.73**		**6.78**		

df= 118 (120)
.05 सार्थकता स्तर पर 1.98
.01 सार्थकता स्तर पर 2.62

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL. -V, ISSUE-II, November-2016
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

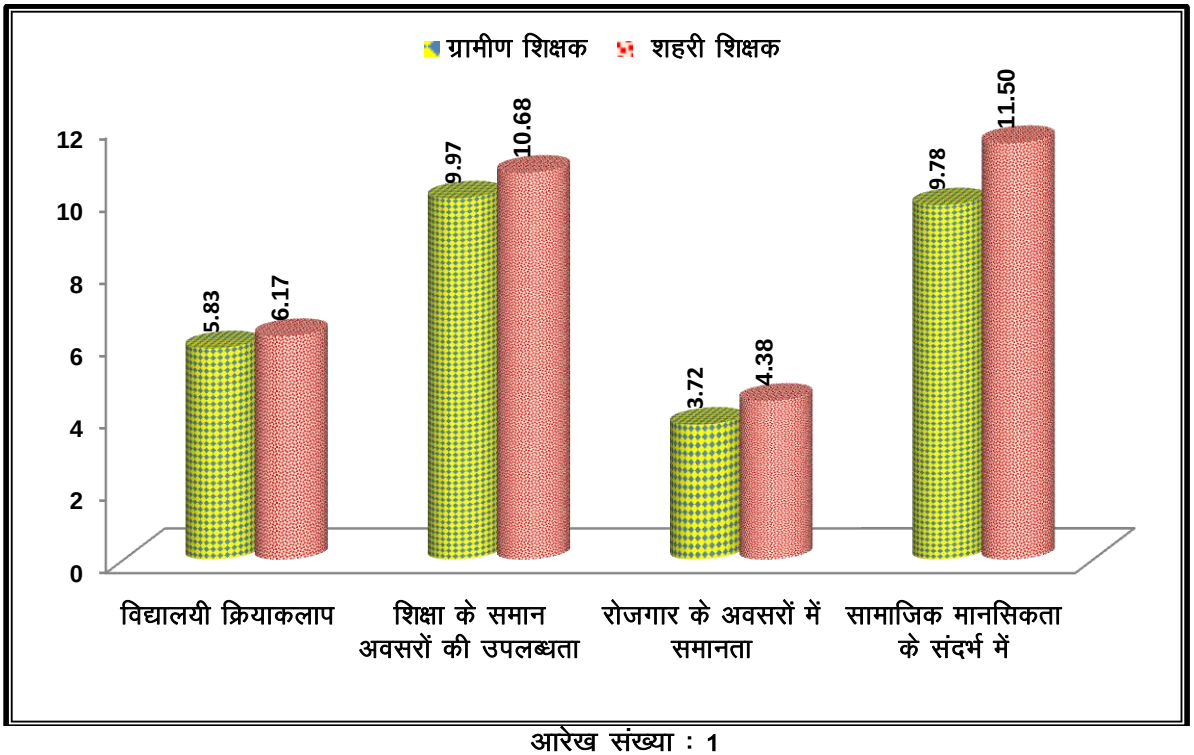

आरेख संख्या : 1

लैंगिक संवेदनशीलता के प्रति ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों (N=60) की जागरूकता का तुलनात्मक विश्लेषण

1. विद्यालयी क्रियाकलापों के संदर्भ में ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की जागरूकता के मध्यमान क्रमशः 5.83 एवं 6.17 तथा मानक विचलन क्रमशः 1.61 एवं 1.64 प्राप्त हुए। इन आँकड़ों के मध्य संगणित टी–मान 1. 15 प्राप्त हुआ, जो कि .05 सार्थकता स्तर पर निर्धारित सारणी मान 1.98 से कम है, जो यह दर्शाता है कि विद्यालयी क्रियाकलापों के संदर्भ में शहरी तथा ग्रामीण शिक्षकों की जागरूकता के मध्यमानों में जो 0.34 अंकों का अन्तर दिखाई दे रहा है, वह सार्थक नहीं है। अतः 95 प्रतिशत विश्वास के साथ यह कहा जा सकता है कि विद्यालयी क्रियाकलापों के संदर्भ में ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की जागरूकता का स्तर एक समान है।
2. शिक्षा के समान अवसरों की उपलब्धता के संदर्भ में ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की जागरूकता के मध्यमान क्रमशः 9.97 एवं 10.68 तथा मानक विचलन क्रमशः 3.15 एवं 2.92 प्राप्त हुए। इन आँकड़ों के मध्य संगणित टी–मान 1.28 प्राप्त हुआ, जो कि .05 सार्थकता स्तर पर निर्धारित सारणी मान 1.98 से कम है, जो यह दर्शाता है कि शिक्षा के समान अवसरों की उपलब्धता के संदर्भ में शहरी तथा ग्रामीण शिक्षकों की जागरूकता के मध्यमानों में जो 0.71 अंकों का अन्तर दिखाई दे रहा है, वह सार्थक नहीं है। अतः 95 प्रतिशत विश्वास के साथ यह कहा जा सकता है कि शिक्षा के समान अवसरों की उपलब्धता के संदर्भ में ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की जागरूकता का स्तर एक समान है।
3. रोजगार के अवसरों में समानता के संदर्भ में ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की जागरूकता के मध्यमान क्रमशः 3.72 एवं 4.38 तथा मानक विचलन क्रमशः 1.92 एवं 2.18 प्राप्त हुए। इन आँकड़ों के मध्य संगणित टी–मान 1.76 प्राप्त हुआ, जो कि .05 सार्थकता स्तर पर निर्धारित सारणी मान 1.98 से कम है, जो यह दर्शाता है कि रोजगार के अवसरों में समानता के संदर्भ में शहरी तथा ग्रामीण शिक्षकों की जागरूकता के मध्यमानों में जो 0.66 अंकों का अन्तर दिखाई दे रहा है, वह सार्थक नहीं है। अतः 95 प्रतिशत विश्वास के साथ यह कहा जा सकता है कि रोजगार के अवसरों में समानता के संदर्भ में ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की जागरूकता का स्तर एक समान है।
4. सामाजिक मानसिकता के संदर्भ में ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की जागरूकता के मध्यमान क्रमशः 9.78 एवं 11.50 तथा मानक विचलन क्रमशः 3.07 एवं 2.33 प्राप्त हुए। इन आँकड़ों के मध्य संगणित टी–मान 3. 46 प्राप्त हुआ, जो कि .01 सार्थकता स्तर पर निर्धारित सारणी मान 2.62 से भी अधिक है, जो यह दर्शाता है कि सामाजिक मानसिकता के संदर्भ में शहरी तथा ग्रामीण शिक्षकों की जागरूकता के मध्यमानों में जो 0.66 अंकों का अन्तर दिखाई दे वह एकदम सार्थक है। अतः 99 प्रतिशत विश्वास के साथ यह कहा जा सकता है कि सामाजिक मानसिकता के संदर्भ में ग्रामीण शिक्षकों की अपेक्षा शहरी शिक्षकों की जागरूकता अधिक है।

समग्र व्याख्या (परिकल्पना परीक्षण–1)

"ग्रामीण व शहरी शिक्षकों में लैंगिक संवेदनशीलता के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।"

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL. -V, ISSUE-II, November-2016
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

समग्र रूप से लैंगिक संवेदनशीलता के प्रति ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की जागरूकता के मध्यमान क्रमशः 29.30 एवं 32.73 तथा मानक विचलन क्रमशः 7.79 एवं 6.78 प्राप्त हुए। इन आँकड़ों के मध्य संगणित टी–मान 2.57 प्राप्त हुआ, जो कि .05 सार्थकता स्तर पर निर्धारित सारणी मान 1.98 से अधिक है, जो यह दर्शाता है कि लैंगिक संवेदनशीलता के प्रति शहरी तथा ग्रामीण शिक्षकों की जागरूकता के मध्यमानों में जो 3.43 अंकों का अन्तर दिखाई दे वह सार्थक है। अतः 95 प्रतिशत विश्वास के साथ यह कहा जा सकता है कि लैंगिक संवेदनशीलता के प्रति ग्रामीण शिक्षकों की अपेक्षा शहरी शिक्षकों में जागरूकता अधिक है।

सारणी संख्याः 2

लैंगिक संवेदनशीलता के प्रति पुरूष एवं महिला शिक्षकों (N=60) की जागरूकता का तुलनात्मक विश्लेषण

क्र. सं.	क्षेत्र	न्यादर्श (60)	मध्यमान	मध्यमान अन्तर	मानक विचलन	'टी' मान	सार्थक अथवा असार्थक अन्तर
1.	विद्यालयी क्रियाकलाप	ग्रामीण	5.82	0.36	1.62	1.21	असार्थक (.05)
		शहरी	6.18		1.64		
2.	शिक्षा के समान अवसरों की उपलब्धता	ग्रामीण	10.18	0.29	3.26	0.52	असार्थक (.05)
		शहरी	10.47		2.83		
3.	रोजगार के अवसरों में समानता	ग्रामीण	3.72	0.66	2.15	1.76	असार्थक (.05)
		शहरी	4.38		1.96		
4.	सामाजिक मानसिकता के संदर्भ में	ग्रामीण	10.10	1.08	3.09	2.11	सार्थक (.01)
		शहरी	11.18		2.49		
कुल जागरूकता		**ग्रामीण**	**29**	**2.40**	**7.99**	**1.78**	**असार्थक (.05)**
		शहरी	32.22		6.77		

df= 118 (120)
.05 सार्थकता स्तर पर 1.98
.01 सार्थकता स्तर पर 2.62

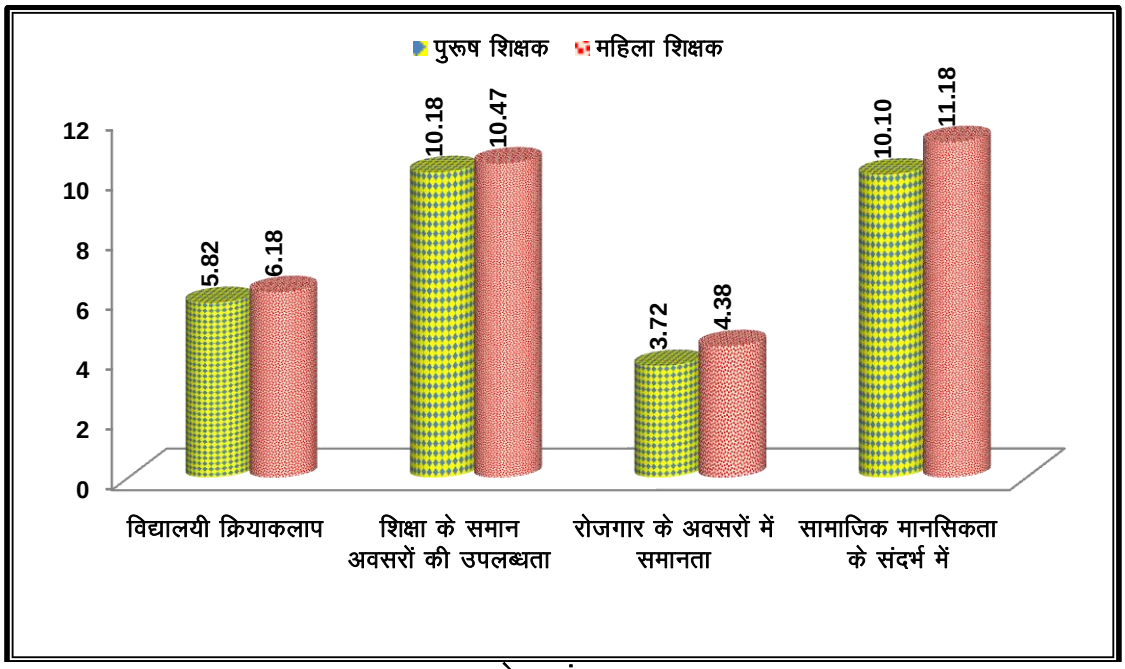

आरेख संख्याः 2

लैंगिक संवेदनशीलता के प्रति पुरूष एवं महिला शिक्षकों (N=60) की जागरूकता का तुलनात्मक विश्लेषण

1. विद्यालयी क्रियाकलापों के संदर्भ में पुरूष एवं महिला शिक्षकों की जागरूकता के मध्यमान क्रमशः 5.82 एवं 6.18 तथा मानक विचलन क्रमशः 1.62 एवं 1.64 प्राप्त हुए। इन आँकड़ों के मध्य संगणित टी–मान 1. 21 प्राप्त हुआ, जो कि .05 सार्थकता स्तर पर निर्धारित सारणी मान 1.98 से कम है, जो यह दर्शाता है कि विद्यालयी क्रियाकलापों के संदर्भ में पुरूष एवं महिला शिक्षकों की जागरूकता के मध्यमानों में जो 0.36 अंकों का अन्तर दिखाई दे रहा है, वह सार्थक नहीं है। अतः 95 प्रतिशत विश्वास के साथ यह कहा जा सकता है कि विद्यालयी क्रियाकलापों के संदर्भ में पुरूष एवं महिला शिक्षकों की जागरूकता का स्तर एक समान है।
2. शिक्षा के समान अवसरों की उपलब्धता के संदर्भ में पुरूष एवं महिला शिक्षकों की जागरूकता के मध्यमान क्रमशः 10.18 एवं 10.47 तथा मानक विचलन क्रमशः 3.26 एवं 2.83 प्राप्त हुए। इन आँकड़ों के मध्य संगणित टी–मान 0.52 प्राप्त हुआ, जो कि .05 सार्थकता स्तर पर निर्धारित सारणी मान 1.98 से कम है, जो यह दर्शाता है कि शिक्षा के समान अवसरों की उपलब्धता के संदर्भ में पुरूष एवं महिला शिक्षकों की जागरूकता के मध्यमानों में जो 0.29 अंकों का अन्तर दिखाई दे रहा है, वह सार्थक नहीं है। अतः 95 प्रतिशत विश्वास के साथ यह कहा जा सकता है कि शिक्षा के समान अवसरों की उपलब्धता के संदर्भ में पुरूष एवं महिला शिक्षकों की जागरूकता का स्तर एक समान है।
3. रोजगार के अवसरों में समानता के संदर्भ में पुरूष एवं महिला शिक्षकों की जागरूकता के मध्यमान क्रमशः 3.72 एवं 4.38 तथा मानक विचलन क्रमशः 2. 15 एवं 1.96 प्राप्त हुए। इन आँकड़ों के मध्य संगणित टी–मान 1.76 प्राप्त हुआ, जो कि .05 सार्थकता स्तर पर निर्धारित सारणी मान 1.98 से कम है, जो यह दर्शाता है कि रोजगार के अवसरों में समानता के संदर्भ मेंपुरूष एवं महिलाशिक्षकों की जागरूकता के मध्यमानों में जो 0.66 अंकों का अन्तर दिखाई दे रहा है, वह सार्थक नहीं है। अतः 95 प्रतिशत विश्वास के साथ यह कहा जा सकता है कि रोजगार के अवसरों में समानता के संदर्भ मेंपुरूष एवं महिला शिक्षकों की जागरूकता का स्तर एक समान है।
4. सामाजिक मानसिकता के संदर्भ में पुरूष एवं महिला शिक्षकों की जागरूकता के मध्यमान क्रमशः 10.10 एवं 11.18 तथा मानक विचलन क्रमशः 3.09 एवं 2.49 प्राप्त हुए। इन आँकड़ों के मध्य संगणित टी–मान 2. 11 प्राप्त हुआ, जो कि .05 सार्थकता स्तर पर निर्धारित सारणी मान 1.98 से अधिक है, जो यह दर्शाता है कि सामाजिक मानसिकता के संदर्भ मेंपुरूष एवं महिला शिक्षकों की जागरूकता के मध्यमानों में जो 0.66 अंकों का अन्तर दिखाई दे वह सार्थक है। अतः 99 प्रतिशत विश्वास के साथ यह कहा जा सकता है कि सामाजिक मानसिकता के संदर्भ में पुरूष शिक्षकों की अपेक्षा महिला शिक्षकों की जागरूकता अधिक है।

समग्र व्याख्या (परिकल्पना परीक्षण–2)

"पुरूष एवं महिला शिक्षकों में लैंगिक संवेदनशीलता के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।"

समग्र रूप से लैंगिक संवेदनशीलता के प्रतिपुरूष एवं महिला शिक्षकों की जागरूकता के मध्यमान क्रमशः 29.82 एवं 32.22 तथा मानक विचलन क्रमशः 7.99 एवं 6. 77 प्राप्त हुए। इन आँकड़ों के मध्य संगणित टी–मान 1. 78 प्राप्त हुआ, जो कि .05 सार्थकता स्तर पर निर्धारित सारणी मान 1.98 से कम है, जो यह दर्शाता है कि लैंगिक संवेदनशीलता के प्रतिपुरूष एवं महिला शिक्षकों की जागरूकता के मध्यमानों में जो 2.40 अंकों का अन्तर दिखाई दे वह सार्थक नहीं है। अतः 95 प्रतिशत विश्वास के साथ यह कहा जा सकता है कि लैंगिक संवेदनशीलता के प्रतिपुरूष एवं महिला शिक्षकों में जागरूकता एक समान ही है।

निष्कर्ष

1. लैंगिक संवेदनशीलता से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर शिक्षकों का अभिमत स्पष्ट नहीं है।
2. समग्र रूप से सभी प्रकार के शिक्षकों में लैंगिक संवेदनशीलता के प्रति जागरूकता का अभाव है।
3. अधिकांश शिक्षकों को मानना है कि कुछ पाठ्यक्रम, कार्यक्रम एवं खेल सिर्फ छात्रों के लिए और कुछ केवल छात्राओं के लिए ही होते हैं।
4. अधिकांश शिक्षक लड़को एवं लड़कियों के लिए सहशिक्षा को उचित नहीं समझते हैं।
5. शिक्षक अध्यापन के दौरान स्त्री चरित्रों का उद्धरणों के रूप में प्रयोग बहुत ही कम करते हैं।
6. अधिकांश शिक्षक उच्च शिक्षा के लिए लड़कियों को बाहर भेजने की प्रवृत्ति को असुरक्षित समझते हैं।
7. तुलनात्मक रूप से ग्रामीण शिक्षकों की अपेक्षा शहरी शिक्षक एवं पुरूष शिक्षकों की अपेक्षा महिला शिक्षक अधिक लैंगिक की दृष्टि से अधिक संवेदनशील है विशेषकर सामाजिक मानसिकता के संदर्भ में।
8. विद्यालयी कार्यकलापों तथा शिक्षा एवं रोजगार के समान अवसरों के संदर्भ में विभिन्न प्रकार के शिक्षकों की लैंगिक संवेदनशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

विचार–मंथन एवं अनुशंसाएँ

प्रस्तुत शोध में कई आंकड़ों द्वारा यह तथ्य स्थापित हो चुका है कि विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रमों को शिक्षक लिंग विशेष के लिए ही उपयुक्त मानते हैं जबकि वैज्ञानिक शोधों ने यह सिद्ध कर दिया है कि कोई व्यवसाय ऐसा नहीं जिसे सिर्फ पुरूष या स्त्री ही कर सकती हो। अतः बिना इस तरफ उलझे विद्यालयों में ऐसे पाठ्यक्रम चलाये जाने चाहिए जो बालक एव बालिकाओं, दोनों के लिए समान रूप से उपयोगी हों और उनके भविष्य को संवार सके।

1. प्रस्तुत शोध से प्राप्त निष्कर्ष शिक्षकों की इस प्रवृत्ति की तरफ स्पष्टतया इंगित कर रहे हैं कि वे अनेक कारणों से लड़कों एवं लड़कियों के लिए सहशिक्षा को पसंद नहीं करते। यह धारणा आमतौर पर समाज के हर वर्ग में पाई जाती है। वस्तुतः इस धारणा ने लैंगिक विभेद को बढ़ाने का ही कार्य किया है जबकि हमें चाहिए कि सहशिक्षा के माध्यम से बालक एवं बालिकाओं को खुलकर एक–दूसरे को समझने का अवसर प्रदान करें ताकि आगे जाकर वे लैंगिक दृष्टि से समान रूप से संवदेनशील बन सके।
2. सुरक्षा संबंधी अनेक कारणों से शिक्षक लड़कियों को उच्च शिक्षा हेतु घर से बाहर भेजने के पक्षधर नहीं है। उनकी चिंता अपनी जगह वाजिब है किंतु यह समस्या का समाधान कदापि नहीं हो सकता। सरकार को ऐसा वातावरण निर्मित करना चाहिए कि बालिकाएँ स्वयं को सुरक्षित अनुभव करते हुए मनचाहे संस्थान में शिक्षा ग्रहण कर सके।
3. प्रस्तुत शोध ने यह भी सिद्ध किया है कि विभिन्न प्रकार के शिक्षकों में लैंगिक संवेदनशीलता के प्रति जागरूकता भिन्न–भिन्न स्तर की पाई गई है। इसलिए यह सुनिश्चित करना होगा कि ग्रामीण एवं शहरी, दोनों क्षेत्रों में पुरूष एवं महिला शिक्षकों की लैंगिक संवेदनशीलता को समान रूप से बढ़ाया जा सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Allan, Anita: Nargis (2010): Gender in Academic Setting Reflects Teachers.
2. Basu, Salil and Koumari Mitra (2006): Need For Gender Sensitive Approaches For Improving Women's Reproductive Healthcare Services.
3. Best, J.W. (1963). Elements of Educational Research Englewood Clifts', New York Prentice Hall Inc.
4. Gupta, Madhu and Seema (2013): Effect of Gender, Academic Stream and Teaching Experience on Job satisfaction of Teachers Working is Teacher's Training Institutions.
5. Girvan, Marnie (2013): Thematic Study On Education And Gender Equality.
6. Jain, Geeta (2010): Gender differences in self concept among adolescent students of Uttarakhand.
7. National Focus Group on Gender Issues in Education. Position Paper (3.2)
8. Maluwa, Dixie (2004): Gender Sensitive Educational Policy AndPractice: The Case Of Malawi.
9. Mukhopadhyay, Pallav (2005): Problem Of Gender Inequality And Expansion of Education Of Women In West Bengal.
10. Sharma, R.A. (1986). Methodology of Educational Resarch. Delhi. Surjeet Publications.
11. Swainson, N; S Bendera, R Gordon, E Kadzamira (1998): "Promoting Girls' Education In Africa– The Design And Implementation of Policy Interventions.
12. मिश्रा, महेन्द्र, डी.एन. (2008). सामाजिक अध्ययन शिक्षण, जयपुर : क्लासिक कलेक्शन।
13. शर्मा, बी.एल. माहेश्वरी, वी.के. (2001). सामाजिक अध्ययन शिक्षण, मेरठ : आर.लाल बुक डिपो।
14. श्रीवास्तव, डी.एन. (2001). शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ, जयपुर : अपोलो प्रकाशन।